सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का तृतीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक राजस्थान के कविशिरोमणि महाकवि माघ की जन्म जयन्ती विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें महाकवि माघ के व्यक्तित्व और कृत्तित्व के विविध पक्षों पर शोधलेखों के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। जो अध्येताओं के लिये निश्चित रूप से मार्गदर्शन करेगा। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् डॉ. रघुवीरप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित **'महाशिवरात्रि महोत्सव एवं उसका आख्यान'** नामक शोधलेख में महाशिवरात्रि के पौराणिक एवं वैदिक महत्व को उद्धृत किया गया है। तत्पश्चात् जयप्रकाश शर्मा द्वारा संकलित **'महाशिवरात्रि व्रत का रहस्य'** शोधलेख के पुराणों में उल्लिखित व्रतों के आध्यात्मिक व वैज्ञानिक महत्त्व को प्रकाशित किया है। तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर ज्ञानेश्वरपुरी जी द्वारा लिखित **'विदेशों में शिवलिङ्ग-पूजा'** शोध लेख में विदेशों में शिव की व्यापकता को बतलाते हुए पूजा पद्धति का वर्णन किया है। अन्त में डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा लिखित **'होलिकोत्सव-एक वैदिक सोमयज्ञ'** नामक शोधलेख में होली पर्व की लौकिक व वैदिक परम्परा को बताकर उपकृत किया है।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा